<u>रक्षा लेखा महानियंत्रक का संदेश</u>

मैं आज अगाध उत्तरदायित्व और गौरव के साथ विनत भाव से रक्षा लेखा महानियंत्रक का पदभार ग्रहण करता हूँ। मैं इस लब्धप्रतिष्ठ विभाग की समृद्ध विरासत, कार्य दक्षता के इसके उच्च मानकों और भारत सरकार तथा रक्षा सेवाओं के बीच स्थापित इसकी साख से भली-भाँति अवगत हूँ ।

रक्षा लेखा विभाग, हमारे सशस्त्र बलों की परिचालन तत्परता, वित्तीय प्रबंधन और सर्विस डिलीवरी को सहयोग प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। हमारे विभाग ने दशकों में अनुशासन, सत्यनिष्ठा और सार्वजनिक सेवा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के आधार पर एक नामचीन प्रतिष्ठा अर्जित की है। यह हमारा सामूहिक उत्तरदायित्व है कि हम न केवल इस विरासत को बनाएँ रखें, बल्कि उत्कृष्टता के लिए प्रयासरत रहते हुए, सर्विस डिलीवरी में नए मानदंड स्थापित करें और उन आधारभूत मूल्यों को सुदृढ़ बनाएँ, जो लंबे समय से हमारी विशिष्टता रहे हैं।

हम एक ऐसे महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं जहाँ परिवर्तन एक रणनीतिक अवसर होने के साथ-साथ एक आवश्यकता भी है। परिवर्तित होते परिदृश्य के कारण यह आवश्यक हो चला है कि हमारी कार्यप्रणाली के हर पहलू का पूर्णरूपेण और सक्रिय डिजिटलीकरण होना चाहिए। प्रौद्योगिकी को केवल एक टूल के रूप में नहीं, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण एनेबलर के रूप में देखा जाना चाहिए जो कार्यकुशलता, परिशुद्धता और प्रतिसंवेदिता का संवर्धन करती है। हमें आंतरिक नियंत्रण की सुदृढ़ता सुनिश्चित करते हुए, निश्चित तौर पर एकीकृत डिजिटल प्रणालियों, डाटा-आधारित निर्णयन और प्रक्रियाओं के स्वचालन की ओर आगे बढ़ना होगा। हमारे मौजूदा नियम, विनियम और वित्तीय औचित्य मानदंड , सभी समय की कसौटी पर खरे ठहरे हैं,

पर हमें यह समझना होगा कि उनके अनुप्रयोग के लिए एक गतिशील और प्रासंगिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हमारी चुनौती इन पारंपरिक अधिदेशों और आधुनिक आवश्यकताओं के बीच तालमेल बिठाने में निहित है - हमें गंभीरता और संवेदनशीलता से यह मूल्यांकन करना होगा कि कौन सी प्रक्रियाएँ अभी भी प्रासंगिक हैं और किन प्रक्रियाओं को वर्तमान रक्षा पारिस्थितिकी की जटिलताओं को पूरा करने के लिए पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में, जोखिम न्यूनीकरण के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों का एकीकरण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। डेटा एनालिटिक्स, कृत्रिम मेधा और प्रेडिक्टिव टूल्स हमें ख़तरों को पहचानने और वित्तीय जोखिम के मामलों को टालने में सक्षम बना सकते हैं। हमें अपने विभाग के भीतर ऐसी क्षमताओं के निर्माण में निवेश करना चाहिए।

पारदर्शिता हमारे मिशन का मूल आधार होनी चाहिए। ऐसे युग में जहाँ जवाबदेही अति महत्त्वपूर्ण है, वहाँ हमारी प्रणालियाँ और प्रक्रियाएँ ऐसी होनीं चाहिए जो सभी हितधारकों में पूर्ण विश्वसनीयता जागृत करे सकें। हमारे द्वारा प्रोसेस किया गया प्रत्येक लेनदेन, हमारे द्वारा दर्ज की गई प्रत्येक लेखापरीक्षा टिप्पणी और हमारे द्वारा प्रदत्त हर सलाह में स्पष्टता, निष्पक्षता और न्यायसंगतता परिलक्षित होनी चाहिए।

इस विभाग की असली ताकत, उसके मानव संसाधन - उनकी निष्ठा, कौशल और उत्कृष्टता के प्रति उनके समर्पण में निहित है। इसलिए, मैं आप सभी से कार्य-दक्षता और सत्य-निष्ठा के उच्चतम मानकों की मर्यादा कायम रखने, परिवर्तन को विश्वास के साथ आत्मसात करने और हमारे साझा लक्ष्यों के प्रति सामूहिक रूप से काम करने का आग्रह करता हूँ।

आइए, हम अपनी गौरवशाली परंपराओं को सहेजते हुए, अपनी क्षमताओं को संवर्धित करते हुए और अपनी भूमिका को इस गतिशील एवं चुनौतीपूर्ण परिवेश में पुनः परिभाषित करते हुए एक साथ आगे बढ़ें । मैं, हमारी इस साझी यात्रा में, आप सब के निरंतर समर्थन और सहयोग की कामना करता हूँ ।

जय हिंद

दिनांक : 1 मई 2026 — (अनुग्रह नारायण दास)

स्थान : नई दिल्ली — रक्षा लेखा महानियंत्रक